International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 25-09-2020; Accepted: 10-10-2020; Published: 26-10-2020
www.educationjournal.in
Volume 5; Issue 5; 2020; Page No. 39-41

शिक्षा का मानवीयकरण

हिना चावड़ा
मूल्य शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शदात्री, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच में परस्पर विश्वास होने की जो अपेक्षा विगत से वर्तमान में की जाती रही है, वह दिखाई नहीं पड़ती है। शिक्षक यह मान लेता है कि कुछ विद्यार्थी योग्य हैं या अयोग्य हैं। उस आधार पर भी वह विद्यार्थी से व्यवहार करता है, किंतु मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित शिक्षा की विषय–वस्तु में यह स्पष्ट किया गया है कि ''हर एक मानव संतान जिज्ञासु है व उसमें समझने की क्षमता है।'' हो सकता है कि कोई एक विद्यार्थी किसी बात को एक ही बार में समझ जाता है और कोई विद्यार्थी उस बात को दस बार या सौ बार बताने के बाद समझता होगा, परंतु वह समझेगा जरूर, क्योंकि समझने की क्षमता समान है। यदि शिक्षक को यह स्पष्ट रहता है तो वह सभी विद्यार्थियों में इस विश्वास को स्थापित कर सकता है कि सभी समझ सकते हैं, जिससे वह विद्यार्थी को समझ सकता है और सभी विद्यार्थियों में समझने की क्षमता समान है, इस विश्वास को वह हर विद्यार्थी में स्थापित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने के लिए सर्वप्रथम अपने स्वयं के कार्य–व्यवहार चरित्र में मानवीय मूल्यों को आत्मसात करें, तभी उनके द्वारा दी जा रही शिक्षा विद्यार्थी ग्रहण कर सकेंगे। विद्यार्थी में व्यक्तिवाद, प्रतिस्पर्धा, द्वेष, परस्पर विरोध का मानसिकता न बनने दें। शिक्षा का मानवीयकरण का आशय है कि शिक्षा की विषय वस्तु एवं इन विषय वस्तु को विद्यार्थियों तक पहुंचाने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए शिक्षक का मानवीय गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक है। शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध विश्वास का हो शिक्षक, विद्यार्थी को समझने की योग्यता से सम्पन्न हो। तभी वह सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करना होगा एवं सही मूल्यांकन कर पाने मे की योग्यता से सम्मन्न होंगे।

मूल शब्दः शिक्षा का मानवीयकरण, मानवीय शिक्षा, मध्यस्थ दर्शन, सह–अस्तित्ववाद, लक्ष्य, समाधान,, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व, चेतना विकास मूल्य शिक्षा

प्रस्तावना
प्रत्येक मानव को अपनी आवश्यकता की पहचान हो जाए। जीने का लक्ष्य स्पष्ट हो जाये इसलिए शिक्षा में मानवीय मूल्यों को देने की आवश्यकता है। आवश्यकताओं को हम कैसे पहचान पाएंगे? मानव समाज का अध्ययन बताता है कि मानव का सार्वभौम लक्ष्य निर्धारित नहीं हो पाया है। हर मानव का लक्ष्य अलग–अलग दिखाई देता है और उम्र के साथ लक्ष्य बदल जाता है। जैसे छोटे बच्चे का लक्ष्य अच्छे नंबर लाकर स्कूल में पास होना है। थोड़ा और बड़े होने पर यह लक्ष्य होता है कि अच्छी नौकरी मिल जाए। युवा होने पर शादी का लक्ष्य। फिर आगे और धन एवं सुविधा के संग्रह का लक्ष्य इत्यादि। इस तरह हमें उम्र बढ़ने के साथ–साथ भी लक्ष्य बदलते हुए दिखाई देते हैं। यह विचारशील मुद्दा है कि शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन लक्ष्य से परिचय कराने में सक्षम है या नहीं? शिक्षा बच्चों को क्या बनाना चाहती है? क्या शिक्षा केवल रोजगार का माध्यम है? क्या शिक्षा स्वयं, परिवार, समाज में, परस्परता में तालमेल पूर्वक जीना सिखाती है। प्रकृति में संतुलन कैसे बना रहे इसे ध्यान में रखते हुए उत्पादन कार्य की स्थाई समझ उपलब्ध कराने में शिक्षा सक्षम है। यह सभी विचारशील मुददे है। वर्तमान बढ़ती हुई समस्याओं को देखते हुए लगता है कि शिक्षा का मानवीयकरण मानव एवं प्रकृति के शुभ के लिए आवश्यक है।

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित शिक्षा में मानव–लक्ष्य को पहचाना गया है। जिससे मानव एवं प्रकृति में तालमेल को प्रमाणित किया जा सकता है। मानवीय लक्ष्य को समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में पहचाना गया है।

समाधान
''सह–अस्तित्व सहज व्यवस्था गति में निरंतरता, त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी का ज्ञान संपन्न होना।'' समझदारी से समाधान होता है। समझदारी अर्थात् ज्ञानसंपन्नता। ''ज्ञान अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान से संपन्न होने से पूर्व ज्ञान होता है।'' मानव की सभी समस्याओं के मूल में समाधान उपलब्ध न होना ही कारण है। समाधान का आशय ही है संपूर्ण ज्ञान। स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति एवं संपूर्ण अस्तित्व का पूर्ण ज्ञान होने पर मानव की सभी समस्याओं का निराकरण संभव है। सभी प्रश्नों का पूर्ण उत्तर प्राप्त होना सभी आयामों में क्यों? क्या? कैसे का उत्तर प्राप्त होना यही सभी समस्याओं का निराकरण है। मानव का समझदारीपूर्ण होना है। अतः इसके लिए शिक्षा भय–मुक्ति के लिए है अर्थात् भयमुक्त मानव तैयार करना शिक्षा का प्रयोजन है। शिक्षा मानव में संज्ञानशीलता विकसित करने के लिए है। मानव संबंधों में अपेक्षा सुनिश्चित करा पाना भी शिक्षा का उद्देश्य है। प्रत्येक घटनाओं को समझ पाने की योग्यता विकसित करने के लिए भी शिक्षा है।

समृद्धि
''अभाव का अभाव ही समृद्धि है अथवा दूसरे अर्थ में उत्पादन अधिक अर्थात् आवश्यकता से अधिक उत्पादन ही समृद्धि है।'' 'आवश्यकता से अधिक है' का भाव ही समृद्धि का भाव है। आवश्यकता सुनिश्चित होने पर ही 'आवश्यकता से अधिक है' का भाव होगा।

अभय

''वर्तमान में विश्वास ही अभय है। सह–अस्तित्व और आनंद सहज अपेक्षा में बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि पोषण क्रिया है और यह परस्पर विश्वास और पूरक क्रिया है।'' अभयता का तात्पर्य विश्वास से है। यदि शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों की संपूर्ण समझ मानव को प्राप्त होती है, तब प्रत्येक मानव को स्वयं में विश्वासपूर्वक जीना होगा जिससे परस्परता में स्वयं, परिवार, समाज में आर्थिक एवं मानसिक रूप से समृद्ध मानवीय परंपरा होने से परस्परता में विश्वास का वातावरण रहेगा।

सह–अस्तित्व

परस्परता में शोषण, संग्रह एवं द्वेषरहित तथा उदारता, स्नेह और सेवासहित व्यवहार, संबंध व संपर्क का निर्वाह ही सह–अस्तित्व है।'' सह–अस्तित्व का तात्पर्य संपूर्ण इकाई का साथ–साथ होना एवं साथ–साथ प्रमाणित होना है। मानव का जीना स्वयं एवं अपनी परस्परता में दूसरे मानव के साथ तथा प्रकृति के साथ न्यायपूर्वक एवं नियमपूर्वक जीना होगा। ऐसे प्रत्येक मानव होंगे, तब परस्परता में विश्वास, स्नेह, उदारता, सेवा जैसे मानवीय मूल्यों का निर्वाह होगा।

मानव का जीना समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के साथ हो पाए, यह ज्ञान शिक्षा के माध्यम से देना ही शिक्षा का मानवीयकरण है। यही शिक्षा का लक्ष्य है। आज मानव–जाति के जीवन में दुखों का मूल कारण समाधान के स्थान पर समस्या का होना है। समृद्धि के भाव के स्थान पर दरिद्रता है। जैसे–जैसे शिक्षा का विकास हुआ है और भौतिक सुविधाओं एवं धन का विकास हुआ है, मानव–मानव के मध्य असुरक्षा एवं अविश्वास का वातावरण भी तेजी से बढ़ा है। जिससे स्वयं में अविश्वास, परस्परता में अविश्वास एवं समाज–व्यवस्था में भय का वातावरण देखने में आ रहा है। अतः आवश्यकता है इन समस्याओं का जड़ से उन्मूलन हो सके। जब हम विचार करते हैं कि शिक्षा क्यों आवश्यक है? शिशु (मानव संतान) के चेतना विकास के लिए क्या आवश्यक है? एक विद्यार्थी शिक्षा–व्यवस्था में ढाई से तीन वर्ष की आयु में प्रवेश लेता है और स्नातक तक शिक्षा पूरी कर वह बाहर आता है। तब यह प्रश्न कि एक विद्यार्थी ने अपने जीवन के 22 वर्ष शिक्षा–व्यवस्था को दिए हैं। उसके बदले में शिक्षा–व्यवस्था से उसे क्या मिला? वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था के फलन को देखें तो स्वयं में विश्वासपूर्वक जीने का विश्वास शिक्षा–व्यवस्था में दिखाई नहीं दे रहा। इसलिए डर/भय के साथ जीना मानुष्य की मजबूरी बन जाती है, जिसके कारण उसके जीवन में स्वयं में अविश्वास, शिकायतयुक्त संबंध अर्थात् संबंधों में अतृप्ति, परिवार में कमी के भाव में जीना अर्थात् परिवार में दरिद्रता, शारीरिक रोग होने की आशंका जैसी भावना का रहना और समाज में भय एवं असुरक्षा के वातावरण में जीने के लिए विवशता बन गई है।

मानव–जाति में संपूर्ण जागृति करना शिक्षा का उद्देश्य है। उसे स्वस्थ मानसिकता प्रदान करना एवं समाधान के साथ जीना सिखा देना शिक्षा का उद्देश्य है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद द्वारा मानव चेतना विकास आधारित मूल्य–शिक्षा प्रस्तावित की गई है। ऐसी मानवीय शिक्षा ग्रहण करके ये युवाओं में–

- स्वयं के प्रति विश्वास।
- संबंधों में तृप्तिपूर्वक जीना।
- परिवार में समृद्धि के साथ जीने की योग्यता।
- स्वस्थ मानसिकता से स्वस्थ शरीर।
- फलतः भयमुक्त समाज/व्यवस्था में जीना बन पड़ता है।

ऐसी शिक्षा प्राप्त प्रत्येक व्यक्ति भयमुक्त समाज का निर्माण करेगा। इन समझ के साथ वह युवा विद्यार्थी ''स्वयं में विश्वास कर पाएगा, श्रेष्ठता का सम्मान कर पाएगा, स्वयं की प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास रहेगा, व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास, व्यवसाय में स्वावलंबन के प्रति विश्वास रहेगा।''

जिसके परिणाम में प्रत्येक मानव का शरीर स्वस्थ रहेगा, परस्पर संबंधों में तृप्तिपूर्वक जीना होगा अर्थात् शिकायत–मुक्त संबंध में जी सकेगा।

परिवार में सुख–समृद्धिपूर्वक जीना होगा अर्थात् उसका मन खुशियों से भरा होगा। समाज में परस्पर अभयता का वातावरण होगा, परस्परता में विश्वास होगा। प्रकृति में ऋतु संतुलित रहेंगी, जिससे धरती स्वस्थ एवं संतुलन में रहेगी। यही मानव के व्यवस्थित होने का प्रमाण है। मानव स्वयं में व्यवस्थित रहेगा, तभी अन्य के साथ एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित कर पाएगा।

''मानवीय षिक्षा का प्रारूप''

मध्यस्थ दर्शन में दिए गए मानवीय शिक्षा के प्रारूप के अनुसार मानव को मानवीयता के संयुक्त रूप में पहचानने की आवश्कता है। सर्वतोन्मुखी समाधान के अर्थ में शिक्षा की पहचान हर मानव के लिए आवश्यक है। हर देशकाल, स्थिति–परिस्थिति में आवश्यक है। इस आधार पर शिक्षा की विषय–वस्तु को जांचने की आवश्यकता होती है कि विषय–वस्तु मानवीय चेतना को स्थापित करने में सक्षम है या नहीं ? बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि प्रदान करने में सक्षम है या नहीं। प्राकृतिक व्यवस्था बनाए रखने के अर्थ में है या नहीं इत्यादि। इसे मानवीय एवं प्राकृतिक आधार पर जांचने की आवश्यकता रहती है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार ''संज्ञानशीलतापूर्वक ही व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी हो पाती है।'' क्योंकि संवेदनाएं नियंत्रित होना परस्परता में विश्वास का महत्वपूर्ण आधार है। स्वयं में व्यवस्थित एवं समाधानित होने से ही संवेदनाएं नियंत्रित रहना संभव है, उससे कम में नहीं। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, मानव जीव चेतना में भ्रमवश ''परधन, परनारी/परपुरुष, परपीड़ात्मक कार्य–व्यवहार'' के रूप में आचरण करने के फलस्वरूप दुखी एवं अव्यवस्था फैलाने में भागीदार होता है अर्थात् गलती करता है एवं ''मानव चेतनापूर्वक मानव स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार के रूप में आचरण करने के फलस्वरूप सुखी होता हुआ स्पष्ट होता है। धन को उदारतापूर्वक सदुपयोग करने की स्थिति में धन से मिलने वाला सुख उपलब्ध होता है, पद का सुख न्यायपूर्वक जीने से होता है अर्थात् संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति के रूप में प्रमाणित होता है।''

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के अनुसार, मानवीय शिक्षा–नीति का प्रारूप भी विकसित किया गया है, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा–नीति में शिक्षा द्वारा हमारे सांस्कृतिक बहुआयामी समाज में सार्वभौम एवं सार्वकालिक मूल्यों द्वारा देश एवं समाज में एकता एवं अखंडता की स्थापना की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। शिक्षा नीति के अनुसार, मानवीय मूल्यों की शिक्षा रहस्यवाद, संप्रदायवाद एवं अंधविश्वास से पूर्णतया मुक्त करने वाली तथा वैज्ञानिक, दर्शन आधारित, व्यावहारिक, सर्वतोन्मुखी समाधान आधारित होनी चाहिए। इन सभी उद्देश्यों को मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद पूरा करता है।

मध्यस्थ दर्षन सह–अस्तित्वाद के अनुसार, 'चेतना विकास मूल्य–षिक्षा' के निम्नांकित उद्देष्य हैं–

1. ''स्वयं में विष्वास'

शिक्षा ऐसी दी जाए, जिससे व्यक्ति स्वयं में विश्वासपूर्वक जी पाए। स्वयं में विश्वासपूर्वक जीना तभी हो पाएगा, जब स्वयं एवं

संपूर्ण के अस्तित्व की समझ होगी। जब व्यक्ति स्वयं ही विश्वास व सम्मान से भरा होगा, तभी वह दूसरों का सम्मान कर पाएगा अर्थात् दूसरों को समझ पाएगा, जिससे दूसरों को समझ पाने का विश्वास स्वयं में रहेगा। इसी तरह व्यक्ति स्वयं से जुड़ी हुई सभी वास्तविकताओं को समझेगा, तब संपूर्ण के प्रति आष्वस्त रहेगा।

2. "परिवार में समृद्धि"

समझपूर्ण होने के बाद जीना परिवार के साथ ही होता है एवं उत्पादन गतिविधियां प्रकृति के साथ हैं, जिसमें प्रकृति के संतुलन चक्र को ध्यान में रखकर अपनी भौतिक वस्तुओं की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होना सम्मिलित है। सही समझ होने पर ही व्यक्ति को अपने शरीर के लिए भौतिक आवश्यकताओं (आहार, आवास, साधन आदि) की कितनी आवश्यकता है अर्थात् शरीर की आवश्यकताओं का ज्ञान एवं मैं/जीवन (स्वयं) की आवश्यकताओं का ज्ञान एवं उनकी पूर्ति की विधि, प्रक्रिया ज्ञान होने पर कितनी आवश्यकता है– यह समझ स्थापित रहती है। 'आवष्यकता से अधिक है' का भाव समृद्धि है। इसके विपरीत अधिकतम संग्रह या सुविधा रहने के बाद भी 'कम है' का भाव होना ही मानसिक दरिद्रता है। यह स्वयं में विश्वास नहीं होने का फलन भी है। स्वयं का ज्ञान नहीं होने पर कितने धन की आवश्यकता है, यह कभी सुनिश्चित नहीं हो पाता। आवश्यकता है शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति में सही समझ पहुंचाना, जिससे अर्थ के प्रयोजन को अपनी भौतिक आवश्यकताओं की सीमा तक पहुंचा पाए। अर्थ कितना और क्यों का ज्ञान ही व्यक्ति में समृद्धि का भाव ला सकता है। समृद्धि के भाव में जीना हर परिवार की आवश्यकता है, इन्हीं समझ के अभाव में हर घर–परिवार मानसिक गरीबी के साथ जी रहा है, जिससे सुखी होने का आधार मानवीय मूल्य नहीं, धन एवं भौतिक सुविधाएं हो गई हैं।

3. "समाज में अभयता'

धरती के प्रत्येक व्यक्ति में सही समझ होने पर स्वयं में विश्वास–सम्मान एवं समृद्धिपूर्वक जीना हो सकेगा। ऐसा जीना प्रत्येक घर–परिवार में होने पर आस–पास के वातावरण में परस्पर मानवीय संबंधों में तालमेल एवं परपस्पर विष्वास, सम्मान, स्नेह, मैत्री, प्रेम का वातारण निर्माण करेगा। तभी समाज में होने वाले अपराध का जड़ से उन्मूलन हो पाएगा। यही समाज में अभयता का वातावरण है। बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक सभी शांति एवं विश्वास का वातावरण चाहते हैं, चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, संप्रदाय, प्रांत या राष्ट्र के हों।

4. "प्रकृति में संतुलन

प्रकृति के शोषण व असंतुलन के लिए मानव जिम्मेदार है। जब धरती के प्रत्येक मानव समझदार होंगे और सही समझ के साथ जीएंगे, तब यह सही समझ के साथ प्रकृति के साथ काम करना भी होगा अर्थात् प्रकृति के संतुलन चक्र को ध्यान में रखकर ही उत्पादन–कार्य गतिविधियां होंगी, जिससे प्रकृति में संतुलन का सपना साकार होगा।

5. "अस्तित्व में सह–अस्तित्व

जब प्रत्येक व्यक्ति स्वयं, परिवार, समाज एवं प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर रखेगा, तभी संतुलनपूर्वक जीना होगा। तब अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था मे भागीदारी प्रमाणित होगी, साथ–ही–साथ न्यायपूर्वक जीना ही सह–अस्तित्वपूर्वक जीना है। मध्यस्थ दर्शन आधारित शिक्षा में अपेक्षा है कि व्यक्ति में/स्वयं में सही समझ होने से परिवार में सही जीना होगा। समाज में सकारात्मक वातावरण एवं मानवीयतापूर्ण, मानवीय आचरण के साथ, मानवीय स्वभाव के साथ जीना होगा, तभी समाज में भयमुक्त, शोषणमुक्त, विश्वास से भरी हुआ समाज–व्यवस्था होगी। यही सपना धरती के प्रत्येक मानव का है। इसी को साकार करने योग्य व्यक्ति को तैयार करना या इन सभी को प्रमाणित करने योग्य विद्यार्थियों को सक्षम बनाना या तैयार करना ही इस शिक्षा का उद्देश्य है।

संदर्भ सूची

1. ए. नागराज जीवन विद्या अध्ययन बिंदु। जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक म.प्र.।
2. ए. नागराज विकल्प क्यों और कैसे? जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक म.प्र.।
3. ए. नागराज (2011), सवांद भाग एक। जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक म.प्र.।
4. ए. नागराज (2009), व्यवहारवादी समाजशास्त्र, जीवन विद्या प्रकाशन दिव्यपथ संस्थान अमरकंटक, म.प्र.।
5. ए. नागराज (2015), मानव–व्यवहार दर्शन, प्रकाशक जीवन विद्या प्रकाशन दिव्यपथ संस्थान अमरकंटक, म.प्र.।, परिचय शिविर लेवल 1 मई (2012)
6. ए. नागराज (2009), समाधनात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या प्रकाशन भजनाश्रम अमरकंटक म.प्र.।
7. ए. नागराज (2008), जीवन विद्या एक परिचय, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक, म.प्र.।
8. ए. नागराज, मानवीय शिक्षा–नीति का प्रारूप, मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्व आधारित।
9. आनंद सुब्रमण्यम शास्त्री (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास।
10. डी. सी. पटेल, शैक्षिक प्रशासन एवं शिक्षा का अधिकार, मुस्कान पब्लिकेशन।
11. वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम माहनक, तृतीय श्लोक। दयान्नद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश।
12. एच.चावड़ा (2019), मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा। प्रकाशक लू.लू. पब्लीकेशन युनाईटेड स्टेट।